

COPY RIGHT



ELSEVIER
SSRN

2022IJIEMR. Personal use of this material is permitted. Permission from IJIEMR must be obtained for all other uses, in any current or future media, including reprinting/republishing this material for advertising or promotional purposes, creating new collective works, for resale or redistribution to servers or lists, or reuse of any copyrighted component of this work in other works. No Reprint should be done to this paper, all copy right is authenticated to Paper Authors

IJIEMR Transactions, online available on 14th Dec 2022. Link

[:http://www.ijiemr.org/downloads.php?vol=Volume-11&issue=ISSUE-12](http://www.ijiemr.org/downloads.php?vol=Volume-11&issue=ISSUE-12)

DOI: 10.48047/IJIEMR/V11/ISSUE 12/134

Title कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक वातावरण की पहचान का अध्ययन

Volume 11, Issue 12, Pages: 1007-1016

Paper Authors:

RANJANA SINGH, DR. BHUPENDRA SINGH CHAUHAN



USE THIS BARCODE TO ACCESS YOUR ONLINE PAPER

To Secure Your Paper As Per **UGC Guidelines** We Are Providing A Electronic Bar Code

कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक वातावरण की पहचान का अध्ययन

CANDIDATE NAME = RANJANA SINGH
DESIGNATION = RESEARCH SCHOLAR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR

GUIDE NAME = DR. BHUPENDRA SINGH CHAUHAN
DESIGNATION = ASSOCIATE PROFESSOR
SUNRISE UNIVERSITY ALWAR

सारांश

शिक्षा आजीवन चलने वाली सचेतन एवं प्राणमयी प्रक्रिया है। जन्म लेने के पश्चात् ही व्यक्ति अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता रहता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता है इस अनुभव को ग्रहण करने में ही शिक्षा निहित है। कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन एक महत्वपूर्ण और गहरा विषय है जिसका मुख्य उद्देश्य कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक संदर्भ को समझने और उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर इसका प्रभाव जानना है। यह अध्ययन उन प्रमुख प्रश्नों को उजागर करने का प्रयास करता है कि कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक वातावरण का यथासंभव रूप से अनुशासन और समर्थन प्रदान करता है या फिर क्या वातावरणिक कारक छात्रों के शैक्षिक सफलता पर प्रभाव डालते हैं।

मुख्यशब्द- शिक्षा, आजीवन, कॉलेज के छात्र, पारिवारिक वातावरण

प्रस्तावना

शिक्षा समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और विश्वास किया जाता है कि पारिवारिक वातावरण छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन पर सीधा प्रभाव डालता है। कॉलेज जीवन एक छात्र के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है और छात्र के पारिवारिक वातावरण का उसके शैक्षिक प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव होता है। पारिवारिक वातावरण में माता-पिता, भाइयों, बहनों और अन्य पारिवारिक सदस्यों के साथ की गई आपसी बातचीत, साथी और साथियों के संग की दोस्ती और परिवार के साथी और दोस्तों के साथ विचार-विमर्श की गई गतिविधियों का अभ्यास किया जाता है। इसलिए, पारिवारिक वातावरण का छात्रों के शैक्षिक अनुभव पर महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है।

माता-पिता की भागीदारी हासिल करने के लिए सरकार की रणनीति पहली बार 1997 के श्वेत पत्र, शिमहाविद्यालय में उत्कृष्टताश में निर्धारित की गई थी। वर्णित रणनीति में तीन तत्व शामिल थे

क) माता-पिता को जानकारी प्रदान करना

इ) माता-पिता को आवाज देना

ग) महाविद्यालयों के साथ माता-पिता के सहयोग को प्रोत्साहित करना

यह रणनीति तब से गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से निर्भाई गई है जिसमें शामिल हैं

माता-पिता की शासी भूमिका बढ़ाएँ।

निरीक्षण प्रक्रियाओं में भागीदारी।

वार्षिक रिपोर्ट और प्रॉस्पेक्टस का प्रावधान।

घर- महाविद्यालय समझौतों की आवश्यकता।

पाठ्यचर्या और महाविद्यालय के प्रदर्शन के बारे में जानकारी की बढ़ती मात्रा का प्रावधान।

अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास में माता-पिता की भागीदारी में गिरावट के कारक कारकों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न शोध किए गए हैं। किशोरों में माता-पिता की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे मध्य में प्रवेश कर रहे हैं और महाविद्यालय एक दोधारी तलवार है। सबसे पहले, जो बच्चे परिपक्व होने लगे हैं, उनमें स्वयं और स्वतंत्रता की भावना विकसित करने की बढ़ती आवश्यकता है जो उनके परिवारों से अलग है। वे विकल्पों और परिणामों को तौलना शुरू करते हैं, अपने दम पर अधिक निर्णय लेते हैं, अपनी गलतियों से सीखते हैं, और अपने निर्णयों और कार्यों को निर्देशित करने के लिए मूल्यों का अपना सेट स्थापित करते हैं। वे अपने माता-पिता से मदद से इनकार करने लगते हैं और गतिविधियों और अपने दोस्तों से मिलने के दौरान उन्हें साथ नहीं चाहते हैं। दूसरा, माता-पिता की भूमिकाएँ भी एक बदलती प्रक्रिया से गुज़र रही हैं; ताकि उनके बच्चों के आत्म-पहचान के विकास की अनुमति मिल सके। जबकि माता-पिता समर्थन और प्यार की पेशकश करना जारी रखते हैं, वे अपने बच्चों की बढ़ती स्वतंत्रता और परिपक्व होने की प्रक्रिया के लिए उनकी समझ के प्रति सम्मान दिखाने के लिए अपने बच्चों को अधिक से अधिक जगह देना शुरू करते हैं। माता-पिता को चाहिए कि वे किशोरों को अपने चुनाव स्वयं करने दें-अच्छे और बुरे- और उन्हें अपने कार्यों और निर्णयों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। महाविद्यालय के वर्षों में माता-पिता की भागीदारी में गिरावट को बच्चों के दृष्टिकोण में बदलाव से भी जोड़ा जा सकता है। युवा लोग यह स्पष्ट करते हैं कि वे नहीं चाहते कि उनके माता-पिता उनके पालन-पोषण और

महाविद्यालयी शिक्षा में वही बड़ी भूमिका निभाएं जो उन्होंने एक बार की थी। कई अभिभावक-छात्र गतिविधियाँ जो महाविद्यालय में स्वीकार्य लगती हैं, जैसे कक्षाओं के लिए पंजीकरण करना, महाविद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेना, या पैदल आना-जाना, महाविद्यालय के छात्रों द्वारा केवल-छात्रों की घटनाओं के रूप में देखा जाता है। बच्चे अपने नए महाविद्यालय के वातावरण के साथ तालमेल बिठाना और उनका सामना करना शुरू कर देते हैं और अपने नए पाठ्यक्रमों की चुनौतियों का सामना करते हैं। माता-पिता को अपने बच्चे महाविद्यालय में जो काम कर रहे हैं, उसकी समझ कम हो सकती है। विभिन्न शोधों में पाया गया है कि माता-पिता ने अपने बच्चों की शिक्षा में कम शामिल होने का नंबर-एक कारण छात्र पाठ्यक्रम की बढ़ती कठिनाई के कारण दिया था। माता-पिता होमवर्क में मदद करने में असमर्थ महसूस कर सकते हैं और शिक्षकों के साथ पाठ्यक्रम के मुद्दों पर चर्चा करने में संकोच कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे समग्र रूप से कम शामिल हो जाते हैं। महाविद्यालय समय के दौरान अपने बच्चों के लिए माता-पिता और माता-पिता के लक्ष्यों के लिए शिक्षकों की अपेक्षाओं के बीच की खाई को पाटने के लिए संचार एक प्रमुख घटक है। माता-पिता और शिक्षकों के लिए उपलब्ध जानकारी की मात्रा में वृद्धि करके, सफलता की ओर एक स्पष्ट मार्ग होगा। इसमें से बहुत कुछ चल रहा है, हालांकि; अधिक शिक्षक माता-पिता तक पहुंच रहे हैं, और माता-पिता के प्रयासों और उनके बच्चों की स्थिति में सुधार के लिए भागीदारी में भी वृद्धि हुई है।

उच्च शिक्षा

शिक्षा एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसका न कोई आदि है न अन्त। मानव जन्म से लेकर अपने अस्तित्व के धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है। बस यदि कुछ बदलता है तो वह शिक्षा का स्वरूप प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यवसायिक एवं तकनीकी शिक्षा इत्यादि किन्तु विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा में उच्च शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण स्तर है। यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने वाली कड़ी है। इस शिक्षा का सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में विशेष महत्व है। कशोर बालक-बालिकाओं में ज्ञानवर्धन के साथ-साथ सामाजिक सद्गुणों का विकास अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के प्रति जागरूकता, आत्म निर्भरता और आत्म विश्वास आदि चारित्रिक गुणों का विकास करना उच्च शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

उच्च शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है। बालक के विकास की किशोरावस्था से सम्बन्धित होने के कारण तथा युवा शक्ति के नेतृत्व प्रशिक्षण का केन्द्र होने के कारण उच्च शिक्षा राष्ट्र की सामाजिक आर्थिक तकनीकी तथा

सांस्कृतिक क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। उच्च शिक्षा रोजगार तथा जीवन-यापन के क्षेत्र में प्रवेश का द्वार खोलती है। किसी भी राष्ट्र की मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग उच्च शिक्षा स्तर से ही प्राप्त होता है। तृतीय उच्च शिक्षा प्राथमिक शिक्षा व उच्च शिक्षा स्तरों की गुणवत्ता को निर्धारित करती है। प्राथमिक महाविद्यालयों के अधिकांश अध्यापक उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं तथा उनकी शिक्षा की गुणवत्ता काफी सीमा तक प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य उच्च शिक्षा के केन्द्रों के लिए छात्रों की पूर्ति का कार्य भी उच्च शिक्षा करती है। उच्च शिक्षा के लिए उच्च शिक्षा आधार-शिला का कार्य करती है। स्पष्ट है इन तीनों दृष्टियों में उच्च शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है।

वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति लाने का श्रेय मनोविज्ञान को है। शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रकृति के विकास के फलस्वरूप शिक्षा को बाल कन्द्रित बनाने का प्रयास किया गया और शैक्षिक समस्याओं का अन्त करने के लिए शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर बल दिया। आज शिक्षा का अर्थ बालक को केवल सूचना प्रदान करना नहीं समझा जाता।

संवेग

संवेगों का बालक के जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान है। श्रेष्ठ संवेगों पर आधारित व्यवहार बालक के स्वास्थ्य को समुन्नत, मानसिक दृष्टिकोण को उदार, कार्य करने की इच्छा को जाग्रत कर बल प्रदान और सामाजिक संबंधों को मधुर बनाते हैं। इसके विपरित क्षुद्र संवेगों पर आश्रित व्यवहार बालक के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास पर क्षतिप्रद प्रभाव डालकर उसको विकृत कर सकते हैं।

संवेग शब्द अंग्रेजी शब्द इमोशन का पर्यायवाची है। इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के इमोवियर से हुई है जिसका अर्थ है हिला देना, उत्तेजित करना या आंदोलित करना। जब भी संवेग की स्थिति आती है व्यक्ति में बेचैनी आ जाती है। कसी भी परिस्थिति में व्यक्ति का व्यवहार कोमलता, भय, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या आदि से युक्त हो जाता है। कई बार व्यक्ति ऐसा संवेगात्मक कर जाता है जिसका कारण उसे ज्ञात नहीं होता इसलिये संवेगों का संतुलित विकास होना अनिवार्य है। संवेग एक प्रकार की ऐसी भावनाओं या भावात्मक अनुभूति होता है जिनकी उपस्थिति का अहसास कुछ विशेष प्रकार के शारीरिक लक्षणों से होता है तथा जिसके वशीभूत व्यक्ति कुछ विशेष प्रकार की चेष्टायें तथा व्यवहार क्रियायें करते हुए देखा जाता है।

1- प्रत्यक्षीकरण के माध्यम से इसकी उत्पत्ति होगी।

- 2- इसमें भावनाओं के उफान का दर्शन होना।
- 3- कई प्रकार के शारीरिक लक्षणों से इसकी उपस्थिति का आभास होना।
- 4- इसका तेजी से जागृत होना परंतु अंत धीरे-धीरे होना।
- 5- इनमें स्थानान्तरणता के गुण का पाया जाना आदि।
- 6- इसका किसी मूल प्रवृत्ति अथवा मूलभूत आवश्यकता से जुड़ा रहना।

संवेगों को मुख्य रूप से दो वर्गों - सकारात्मक तथा नकारात्मक संवेग में बाँटा जा सकता है। व्यक्ति और समाज दोनों के लिये हितकारी प्रेम, आमोद सृजनात्मकता आदि संवेगों को सकारात्मक संवेगों का दर्जा दिया जाता है जबकि भय, क्रोध, ईर्ष्या आदि विषादयुक्त संवेग नकारात्मक संवेग कहलाते हैं। संवेग चाहे नकारात्मक हो या सकारात्मक वे व्यक्ति विशेष के लिये परिस्थिति विशेष अनुसार लाभकारी सिद्ध होते हैं क्योंकि उनका प्रादुर्भाव व्यक्ति के मस्तिष्क हृदय और इन्द्रियों को उसकी व्यवहार क्रियाओं के माध्यम से जोड़ता है। क्रोध, मद, घृणा और अवसाद जिन्हें हम गलत संवेग समझते हैं वे भी समय और परिस्थिति अनुसार उतने ही आवश्यक और हितकारी होते हैं, जितने कि साहस, प्रेम, शांति और हमें अपने संवेगों को उचित समय पर उचित मात्रा में उचित उप से अभिव्यक्त करने का ही आदर्श मानकर बोलना चाहिये कि “कोई भी व्यक्ति क्रोध कर सकता है यह बहुत आसान है परन्तु सही व्यक्ति के साथ सही मात्रा में सही समय पर सही प्रयोजन हेतु सही ढंग से क्रोध करना आसान नहीं है।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास

कशोरावस्था में संवेगात्मक संतुलन बिगड़ जाता है उस समय संवेगों में आँधी और तूफान की सी गति और प्रचण्डता होती है इसलिये किशोरावस्था को प्रायः तूफान और तनाव का समय माना जाता है। जीवन की किसी अन्य अवस्था में संवेगात्मक शक्ति का प्रवाह इतना भीषण नहीं होता जितना कि इस अवस्था में पाया जाता है। एक किशोर के लिये अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना बहुत कठिन होता है। इस अवस्था में किशोर संवेगात्मक दृष्टिकोण से बहुत चंचल और अस्थिर हो जाते हैं। शिशु की तरह किशोर क्षण में रूष्ट और क्षण में तुष्ट दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोग किए गए उपकरणों की सहायता से एकत्र किए गए आकड़ों को व्यवस्थित कर एवं तालिका बद्ध कर व्याख्या की गयी है जिसके फलस्वरूप अध्ययन के परिणामों व व्याख्या के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, उच्च पारिवारिक वातावरण वाले शहरी छात्रों की तुलना में निम्न पारिवारिक वातावरण वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न है जबकि उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाली शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है। इसी भांति उच्च तथा निम्न पारिवारिक वातावरण वाले ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि समान है, जबकि उच्च पारिवारिक वातावरण वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न पारिवारिक वातावरण वाली छात्राओं से अधिक है। उच्च तथा निम्न समायोजित शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि निम्न समायोजित शहरी छात्रों की तुलना में उच्च समायोजित शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च है। इसी भांति उच्च तथा निम्न समायोजित ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि उच्च समायोजित ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न समायोजित ग्रामीण छात्राओं से अधिक है।

उच्च तथा निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है जबकि उच्च सांवेगिक परिपक्वता वाले शहरी छात्रों की तुलना में निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाले शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि कम है। इसी भांति उच्च तथा निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि समान है जबकि उच्च सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, निम्न सांवेगिक परिपक्वता वाली ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। उच्च पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विज्ञान छात्रों एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले शहरी विज्ञान छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि शहरी कला छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अरबिंदो, एस.ए. (2019), "नेशनल एजुकेशन सिस्टम", पांडिचेरी: श्री अरबिंदो आश्रम, 1924।

ऑस्टिन, एम.डी. (2016), "ड्रीम रिकॉल और बौद्धिक क्षमता का पूर्वाग्रह", प्रकृति, 231, 59-60।

बेकन, पी. (2016), "द आइज़ हैव इट", साइकोलॉजी टुडे, 1971, 4, 64-69

बैलेरिंग, लॉरी डी.; कोच, अल्बर्टा (2019), "पारिवारिक संबंध जब एक बच्चे को उपहार में दिया जाता है", गिफ्टेड चाइल्ड क्वार्टरली, वॉल्यूम 28 (3), 2019, 140-143।

बर्न। जैसा। (2017), "एजुकेशनल रिसर्च का विश्वकोश" डब्ल्यू.एस. मोनरो संशोधित न्यूयॉर्क

बैरोन, एफ। (2019) "क्रिएटिव पर्सन एंड क्रिएटिव प्रोसेस", न्यूयॉर्क: होल्ट राइनहार्ट और विंस्टन, 2019।

बर्न, एम.एल. और कीरना जे.ए. (2018), "द ह्यूमन नर्वस सिस्टम", फिलाडेफिया, हार्वर्ड एंड रो पब्लिशर्स।

गेशविंड (2020), "एक-बनाम दोहरे-अभिभावक परिवारों में हिस्पैनिक छात्रों के एक राष्ट्रव्यापी नमूने के बीच अकादमिक उपलब्धि का अनुदैर्घ्य विश्लेषण", हिस्पैनिक जर्नल ऑफ बिहेवियरल साइंसेज। खंड 24; नहीं 4; वर्ष 2017. 430-447।

बेकन (2016), "चेहरे की पहचान की तंत्रिका मनोविज्ञान" अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, 35, 176-186

गेल्डार्ड (2017), "परिवार के भीतर बौद्धिक विकास: संगम मॉडल का एक नया अनुप्रयोग"। विकासात्मक मनोविज्ञान, खंड 16(5), 506-515।

रूबेनजेन (2018), "द एडजस्टमेंट ऑफ स्टूडेंट्स विद लर्निंग डिसेबिलिटीज टू यूनिवर्सिटी एंड इट्स रिलेशनशिप टू सेल्फ-एस्टीम एंड सेल्फ-एफिशिएंसी", जर्नल ऑफ लर्निंग डिसेबिलिटीज, वॉल्यूम। 22 नंबर 9 590-592

ब्रैकन एंड टॉरेंस (2019), "रिसर्च इन एजुकेशन" प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।

गैज़िनिगा (2019) "किशोरावस्था में रचनात्मकता", III-संस्करण। डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, (2019)।

वेइज़नबाम (2018) "दि अदर साइड ऑफ द ब्रेन-II; एन अपोजिशनल माइंड", बुलेटिंग ऑफ द लॉस एंजिल्स न्यूरोलॉजिकल सोसाइटी, वॉल्यूम:34, 135-1962।

जॉय एम. रीड (2017) "द अदर साइड ऑफ द ब्रेन-I डिस्ग्राफिया एंड डिस्कोपिया फॉलोइंग सेरेब्रल कमिसिओरोटॉमी", बुलेटिंग ऑफ द लॉस एंजिल्स न्यूरोलॉजिकल सोसाइटी, वॉल्यूम: 34, 2017, 73-105।

रेड्डी, सुधाकर (2020) "दिमाग का दूसरा पक्ष- II, एक अपोजिशनल माइंड"। लॉस एंजिल्स न्यूरोलॉजिकल सोसायटी का बुलेटिन, 49, 135-162।

डुलेविकज़, विक; हिग्स, मैल्कम (2019) "फाउंडेशन ऑफ साइकोलॉजी", न्यूयॉर्क, जॉन विले एंड संस 164-168

हिज-ची सियाओ और यिंग-सीन लियांग (2018) "विश्वविद्यालय के छात्रों में एट्रिब्यूशनल स्टाइल्स एंड एकेडमिक अचीवमेंट: ए लॉन्गिट्यूडिनल इन्वेस्टिगेशन", टेम्पल यूनिवर्सिटी, फिलाडेल्फिया, पेंसिल्वेनिया, कॉग्निटिव थेरेपी एंड रिसर्च। वॉल्यूम 26; नंबर 3; 309-315।

कल्पना वेणुगोपाल और मृदुला के. (2017) "दि ड्यूलिटी ऑफ द माइंड।" प्रशिक्षक, 54-58।

सुश्री कमलप्रीत कौर और डॉ शिखा ढल (2017) "स्ट्रेस एंड कॉग्निटिव फंक्शन", जर्नल ऑन करंट ओपिनियन इन न्यूरोबायोलॉजी, वॉल्यूम 5, अंक 2, पेज 205-216

लेस्ली मॉरिसन गुटमैन; कैरल मिडगली (2020) "शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण" खंड। दिल्ली प्रकाशन विभाग में सचिव एनसीईआरटी, ईडी द्वारा प्रकाशित।